साहित्य संगम

(वार्षिक लघु पत्रिका)

प्रकाशक : हिंदी साहित्य परिषद्, हिंदी विभाग, कालिंदी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

2021-22

प्राचार्या की कलम से . . .

मानव जीवन में साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि साहित्य ही मनुष्य की बुराइयों का अंत करके उसे एक बेहतर इंसान बनाता है। देखा जाए तो साहित्य के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। साहित्य ही मनुष्य के जीवन में खुशियाँ भरता है। साहित्य के माध्यम से ही मनुष्य अच्छा बोलना और सुनना सीखता है।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह देश उन्नति नहीं कर सकता। यह सच है कि किसी देश की भाषा और साहित्य के आधार पर ही वहाँ के समाज, सभ्यता एवं संस्कृति का सहज ही आंकलन किया जा सकता है, क्योंकि साहित्य में मानवीय समाज के सुख-दुःख, आशा-निराशा, साहस-भय और उत्थान-पतन की अभिव्यक्ति होती है। साहित्य राष्ट्रीय एकता, मानवीय समानता, विश्व-बंधुत्व और सद्भाव के साथ हाशिए के आदमी के जीवन को ऊपर उठाने का काम करता है।

साहित्य में सत्य की साधना है, शिवत्व की कामना है और सौंदर्य की अभिव्यंजना है। शुद्ध, जीवंत एवं उत्कृष्ट साहित्य मानव समाज की संवेदना और उसकी सहज वृत्तियों को युगों-युगों तक जनमानस में संचारित करता रहता है। तभी तो कबीर हो या प्रेमचंद उनकी रचनाएँ आज भी समाज के लोगों में चेतना जगाने का काम कर रही हैं।

मुझे इस बात की अत्यंत ख़ुशी है कि हर वर्ष की भांति कालिंदी महाविद्यालय का हिंदी विभाग 'साहित्य संगम' लघु पत्रिका का प्रकाशन इस वर्ष भी कर रहा है। यह पत्रिका छात्राओं को एक साहित्यिक मंच प्रदान करती है, जिसके माध्यम से छात्राएं अपनी लेखन क्षमता को प्रकट करती हैं, जो छात्राओं में एक उम्मीद, आत्मविश्वास और चेतना को जाग्रत करने का काम करती है।

समाज और साहित्य के प्रति अपना दायित्व समझते हुए कालिंदी महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा साहित्यिक पत्रिका के रूप में उठाया गया यह कदम निश्चित रूप से सराहनीय है। हिंदी विभाग और सभी छात्राएं बधाई की पात्र हैं।

प्राचार्या

प्रो. नैना हसीजा

कालिंदी महाविद्यालय

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।

मैथिलीशरण गुप्त

साहित्य समाज का दर्पण है। एक साहित्यकार समाज के विभिन्न सरोकारों को अपनी लेखनी का हिस्सा बनाता है। वह अपनी सर्जनात्मक क्षमता से शोषित, पीड़ित, हाशिए के लोगों की आवाज बनता है। लेखक अपनी रचनाओं के द्वारा समाज के लोगों को नई दिशा देता है, उनको प्रेरित करता है. इसी उम्मीद के साथ हिंदी साहित्य परिषद्, हिंदी विभाग द्वारा प्रकाशित 'साहित्य संगम' लघु पत्रिका छात्राओं को अपनी सर्जनात्मकता को अभिव्यक्त करने का एक मंच प्रदान करती है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमारी छात्राओं ने अपनी लेखन कला के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं पर अपनी समझ का बखूबी परिचय दिया है। वे अपनी रचनाओं में स्त्री और दलित अस्मिता की बात करती हैं, परिवार और समाज की बात करती हैं, भ्रष्टाचार, राजनीति और बाजार को लेकर एक समझ रखती हैं। जिससे पता चलता है कि छात्राएं अपने समय और समाज को लेकर कितनी सतर्क, संवेदनशील और जागरुक हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि यह नई पीढ़ी अपनी लेखन कला से, अपनी सर्जनात्मकता से, अपनी सोच और समझ से साहित्य और समाज में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगी।

डॉ. मंजु शर्मा

संयोजिका

हिंदी साहित्य परिषद्

संपादक मंडल

डॉ. मंजु शर्मा

डॉ. सुरेश चंद मीणा

डॉ. ममता चौरसिया

शाम्भवी

अंजली

प्रो. अनिल राय और हिंदी विभाग के अध्यापक

कालिंदी महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

कालिंदी महाविद्यालय की स्थापना सन 1967 में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित महिला शैक्षिक संस्थानों के रूप में हुई. देवनगर के एक विद्यालय भवन से शुरू हुआ यह महाविद्यालय आज पूर्वी पटेल नगर में 8.25 एकड़ में फैले खुबसूरत परिसर में अवस्थित है, महाविद्यालय में 21 मुख्य शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के अलावा विदेशी भाषाओं में 5 समकालीन, अल्पकालीन, एड-ऑन सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हैं। फ्रेंच और चीनी, यात्रा और पर्यटन, संचार कौशल और व्यक्तित्व विकास के साथ कौशल विकास सम्मिलित हैं, जिसमें छात्राएं अपने कौशल के विकास हेतु दाखिला लेती हैं। महाविद्यालय का उद्देश्य नियमित छात्राओं सहित गैर कॉलेजिएट महिला शिक्षा बोर्ड और स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग के तहत दाखिला लेने वाली 7,400 से अधिक छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना तथा उनका चौमुखी विकास करना है। इस संस्थागत जिम्मेदारी का निर्वाह में 199 योग्य, प्रतिष्ठित शिक्षक संकाय के समूह के साथ 86 कुशल और सहकारी प्रशासनिक/ तकनीकी/ सहायक कर्मचारी अपना योगदान दे रहे हैं। प्रशासन ने महाविद्यालय को सभी छात्राओं के लिए सुरक्षित एवं सुविधा संपन्न बनाने का पूर्ण प्रयास किया है

कालिंदी कॉलेज आज निरंतर प्रगति की सीढियाँ चढ़ रहा है. जिसने हाल ही में भारत के कॉलेजों के बीच राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क इंडिया रैंकिंग (NIRF) 2020 के द्वारा 123 वां स्थान प्राप्त किया है। ये उपलब्धियां उन सभी हितधारकों के अथक प्रयासों का परिणाम है, जिन्होंने छात्राओं में जागरूकता लाने, उनके सर्वांगीण विकास तथा उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में अपना योगदान दिया। महाविद्यालय वर्ष भर चलने वाली शैक्षणिक, सहशैक्षणिक व अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से छात्राओं में समूह-भावना, आलोचनात्मक समझ, अभिनव विचारों व रचनात्मक प्रयासों के लिए मंच प्रदान करता है और सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समुदाय से आने वाले विद्यार्थियों की बेहतर शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध है. अपने समर्पित कर्मचारियों और उत्कृष्ट बुनियादी ढांचे को देखते हुए यह कोई आश्चर्य नहीं है कि कॉलेज अपनी छात्राओं और समाज की अच्छी सेवा कर रहा है। यह अपनी छात्राओं की लगातार बदलती जरूरतों के प्रति संवेदनशील है और उन्हें बेहतर सुविधाएं और संसाधन उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

हिंदी विभाग

(कालिंदी महाविद्यालय)

हिंदी विभाग की स्थापना सन 1967 में कालिंदी महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही की गई थी. विभाग की शुरुआत बी.ए. प्रोगाम हिंदी पाठ्यक्रम के शिक्षण के साथ की गई. बाद में बी.ए. हिंदी ऑनर्स पाठ्यक्रम की शुरुआत सन 1971 में और एम्.ए. हिंदी पाठ्यक्रम की शुरुआत सन 1991 में की गई. इसके अलावा हिंदी विभाग के द्वारा वाणिज्य व कला स्नातक पाठ्यक्रमों की छात्राओं को विविध अंतरानुशासनिक पाठ्यक्रम भी पढाया जाता है. इस समय विभाग में 13 शिक्षक अपनी सेवाएं दे रहे हैं. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित विभाग की समिति 'हिंदी साहित्य परिषद्' समय समय पर विभिन्न शैक्षणिक व सहशैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करती रहती है. हिंदी विभाग में अब तक महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रतिभाशाली और सुदृढ़ व्यक्तित्व के धनी शिक्षकों की सूची इस प्रकार है –

क्र.	शिक्षक	कार्यग्रहण तिथि	सेवानिवृत तिथि
1.	श्रीमती आदर्श कुमारी जैन	21.07.1967	30.09.1980
2.	श्रीमती कमला मधोक	21.07.1967	31.03.1987
3.	डॉ. कुसुम गुप्ता विषय- हिंदी और गुजराती व्याकरण के अंगों का तुलनात्मक अध्ययन	21.07.1967	नवम्बर, 2010
4.	डॉ. प्रेम गौड़	16.07.1967	31.12.2003
5.	सुश्री सुकांति केशव	16.07.1967	31.06.2006

एम्.लिट् विषय- प्रसाद के नाटकों में प्रयुक्त
पारिभाषिक शब्दावली

6. डॉ. प्रामिला गोयल 21.07.1968
05.05.2005
विषय- प्रेमचंद और हरिनारायण आप्टे के उपन्यासों
का तुलनात्मक अध्ययन

7. श्रीमती नीना भाटिया 25.07.1968
30.04.2006

8. डॉ. राज बुद्धिराजा 16.07.1969
15.03.2002
विषय- देव और उनकी कविता

9. डॉ. पुष्पलता वर्मा 16.07.1969
02.07.2003
विषय- गाथा सप्तशती और रीतिकालीन श्रंगारिक
सतसैयों का तुलनात्मक अध्ययन

10. डॉ. मीना गुप्ता 16.07.1969 मई,
2010
विषय- प्रेमचंद के कथा साहित्य की समीक्षाओं
का मूल्यांकन

11. डॉ. प्रभा शर्मा 20.07.1969
10.05.2005
विषय- प्रेमचंद और उनके समवर्ती कथा साहित्य
में लोक संस्कृति

12. श्रीमती प्रभा शोभा छिब्बर 11.09.1969
31.01.2005
एम्.लिट्. हिंदी समीक्षा

13. डॉ. शशि प्रभा गुप्ता 11.09.1969
01.09.2005
विषय - प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में नैतिक मूल्य

14. श्रीमती अंशुमाला कुमार 28.07.1973 अगस्त, 2012
एम्. लिट्. विषय- सातवें दशक के हिंदी नाटकों
में संवाद योजना

15. डॉ. मालती (प्राचार्या कालिंदी महाविद्यालय) 09.06.1967
12.12.2007
विषय- आधुनिक बृज काव्य में अभिव्यंजना शिल्प

16. श्रीमती पुष्पा हंस

17. डॉ. अनीता गुप्ता 07.09.1987
विषय - हिंदी वर्तनी का विकास

18. डॉ. मंजु शर्मा 14.07.2006 कार्यरत
विषय- स्वातंत्र्योत्तर सांप्रदायिक सौमनस्य और
हिंदी नाटक

19. डॉ. आरती सिंह 14.07.2006
कार्यरत
विषय - घनानंद और प्रसाद के स्वच्छंदतावादी काव्य का
तुलनात्मक अध्ययन

20. डॉ. मोहिनी श्रीवास्तव 14.07.2006
कार्यरत

विषय – समकालीन स्त्री विमर्श के संदर्भ में साठोत्तर
हिंदी उपन्यास

21. सुश्री रेखा मीणा 23.08.2010
कार्यरत
मीडिया

22. डॉ. विभा ठाकुर 06.09.2010
कार्यरत
विषय – हिंदी और बांग्ला के महिला उपन्यासकारों
के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन

23. सुश्री बलजीत कौर 28.07.2011
कार्यरत
विषय– 'अग्निलीक' में रामकथा का रचनात्मक प्रयोग

24. डॉ. पुखराज जांगिड 04.08.2011
कार्यरत
विषय – साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण

25. डॉ. रक्षा गीता 28.07.2011
कार्यरत
विषय – धर्मवीर भारती के साहित्य में परिवेश बोध

26. डॉ. ऋतु 31.07.2012
कार्यरत
विषय – समकालीन हिंदी नाटकों में वर्चस्व और प्रतिरोध

27. डॉ. ब्रह्मानंद 08.10.2015
कार्यरत
विषय – हिंदी दलित आलोचना का स्वरुप और दृष्टियाँ

28. श्री हेमंत रवि रमन 13.01.2016
कार्यरत
विषय – भुवनेश्वर के नाटकों की रंग संकल्पना

29. डॉ. नीरू 15.03.2016
कार्यरत
विषय – सामानांतर सिनेमा श्याम बेनेगल की फ़िल्में
और हाशिए का विमर्श

30. डॉ. संजय कुमार सिंह 26.07.2017
कार्यरत
विषय – प्रेमचंद के कथा साहित्य में दलित चेतना

31. डॉ. लवकुश 08.08.2019
कार्यरत
विषय– स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में गाँधी-नेहरू दर्शन

32. डॉ. ममता चौरसिया 08.08.2019
कार्यरत
विषय– महाकवि निराला के साहित्य में शोषित दलित वर्ग

33. डॉ. सुरेश चंद मीणा 09.08.2019
कार्यरत
विषय– मध्यकालीन प्रेमाख्यानक काव्य में स्त्री-अस्मिता के
विविध आयाम

शिक्षकों की उपलब्धियाँ

डॉ. मंजु शर्मा

पुस्तकें –

1. सांप्रदायिक सद्भाव और हिंदी नाटक – रचनाकार पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
   ISBN – 978-93-87932-25-8
2. राम की लड़ाई : संवेदना और शिल्प – रचनाकार पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
   ISBN – 978-93-87932-30-2

डॉ. आरती सिंह

पुरस्कार –

1. सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता पुरस्कार – उच्च शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार

अतिथि प्राध्यापक –

1. एसोसिएट प्रोफ़ेसर – हंकुक विश्विद्यालय ऑफ़ फॉरेन स्टडीज, साउथ कोरिया

हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

सत्र – 2021-22

संयोजिका – डॉ. आरती सिंह, डॉ.मंजु शर्मा
सह-संयोजक – डॉ. ममता चौरसिया एवं डॉ. सुरेश चंद मीणा
परामर्श मंडल – समस्त हिंदी विभाग

हिंदी साहित्य परिषद, हिंदी विभाग की एक ऐसी साहित्यिक संस्था है, जो छात्राओं की प्रतिभा को प्रकट करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। परिषद् की ओर से समय-समय पर विभिन्न प्रकार की साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। जिनसे छात्राओं में सृजनात्मक क्षमता के साथ-साथ उनका सर्वांगीण विकास हो सके। वार्षिक सत्र 2021-22 में हिंदी साहित्य परिषद् ने विविध प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया । जिनका विवरण इस प्रकार हैः-

***हिंदी साहित्य परिषद् चुनाव*- -**

हिंदी साहित्य परिषद् के पदाधिकारियों का चुनाव कक्ष संख्या टी.आर.आई.1 में दिनांक 10.03.2022 को दोपहर 12:30 बजे सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। चुनाव के दौरान हिंदी विभाग के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। पदाधिकारियों का चयन किया गया-
अध्यक्ष – लीना (तृतीय वर्ष)
उपाध्यक्ष- प्रियांशी शर्मा (तृतीय वर्ष)
सचिव- विशाखा कुमारी (द्वितीय वर्ष)
कोषाध्यक्ष- जुबिया (प्रथम वर्ष)

10.03.2022 को ही कला-स्नातक (विशेष) हिंदी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष से दो-दो कक्षा प्रतिनिधियों का चुनाव किया गया, जिनके नाम इस प्रकार हैं-
प्रथम वर्ष- काजल शुक्ला एवं राज नंदिनी
द्वितीय वर्ष- मानसी एवं काजल कुमारी
तृतीय वर्ष- इशिका एवं शाम्भवी

एक दिवसीय राष्ट्रीय व्याख्यान –

हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा दिनांक 29 अप्रैल 2022 को एक दिवसीय व्याख्यान 'हिंदी का भविष्य' का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि प्रोफेसर अनिल राय, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम की शुरुआत कालिंदी महाविद्यालय की हिंदी विभाग प्रभारी एवं हिंदी साहित्य परिषद् की समन्वयक डॉ. आरती सिंह ने अतिथि सत्कार के साथ किया। उन्होंने कालिंदी महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर नैना हसीजा का भी अभिवादन किया। मंच संचालन सुश्री बलजीत कौर के द्वारा किया गया।

प्रो. अनिल राय ने 'हिंदी के भविष्य' विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लगभग 165 देशों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन किया जाता है। आज पूरे विश्व में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन के प्रति रुझान है। आज के समय में बहुसंख्यक विदेशी छात्र-छात्राएं हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं। उनमें भारतीय संस्कृति की सामासिक समरसता और भारत में निहित ज्ञान का अर्जन प्रमुख है। आगे उन्होंने कहा कि हम सभी के लिए हिंदी भाषा भाषी होना अत्यंत गौरव की बात है।

डॉ. राय ने बताया कि अपनी भाषा और वह भी केवल एक भाषा का प्रयोग करने वाला देश विकासपथ में अग्रणी होता है। दूसरे देशों के उदाहरण द्वारा उन्होंने अपनी बात को प्रमाणित किया। आगे उन्होंने बताया कि हिंदी भाषा बहुत ही वैज्ञानिक ढंग से बोली और लिखी जाती है। अंग्रेजी भाषा के समान यहां पर उच्चारण संबंधी विविधता नहीं दिखाई पड़ती है। उदाहरणस्वरूप उन्होंने अंग्रेजी के बहुत से शब्दों के अलग-अलग राष्ट्रों में उच्चारण संबंधी भिन्नता की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित किया। जबकि हिंदी भाषा में क्षेत्र विशेष की विभिन्नता होते हुए भी एकरूपता दिखाई पड़ती है। उन्होंने हिंदी भाषा के ध्वनियों के उच्चारण में विशेष रुप से सावधानी बरतने की जरूरत बताई। उदाहरण देकर उन्होंने विषय को और भी स्पष्ट किया। भाषा में देशकाल एवं क्षेत्र विशेष संबंधी अशुद्धियों को दूर करने का सुझाव भी दिया और इसके साथ ही उन्होंने बताया कि हिंदी वालों को आज के दौर

में तकनीकी ज्ञान अर्जित करने की ज्यादा जरूरत है। क्योंकि आज के समय में हर जगह बाजारवाद का वर्चस्व दिखाई पड़ रहा है और इस संबंध में भाषा को भी बाजार के अनुसार अपने स्वरूप को बदलने की जरूरत है। आगे उन्होंने कहा कि विदेशों में धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद किये गए हैं। ग्रंथों में निहित भारतीय संस्कृतिक परिवेश को जानना आज के समय में आवश्यक है। आज भाषाओं में फर्क नहीं बल्कि सामंजस्य बैठाने की जरूरत है। एक भाषा के साथ दूसरी भाषा का ज्ञान आज के समय में जरूरी है । दूसरी भाषाओं और बोलियों के शब्दों को अपने में समाहित करने पर ही हिंदी भाषा समृद्ध हुई है। यदि किसी भी एक क्षेत्र विशेष के शब्द को निकाल दें तो हिंदी भाषा की सांस्कृतिक सामासिकता समाप्त हो जाएगी। आज अन्य भाषाओं को भी सीखने की आवश्यकता है तभी हम दूसरे देशों में निहित ज्ञान को जान सकेंगे। डॉ. राय ने अच्छी हिंदी सीखने को प्रमुखता दी। आज फिल्म भी बाजारवाद के अनुसार हिंदी के स्वरूप परिवर्तन को आत्मसात कर आगे बढ़ा है। कार्यक्रम के अंत में डॉ. मंजू शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। दूसरे सत्र में छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया। समापन सत्र में विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गए।

<u>हिंदी विभाग अध्यापक – अभिभावक बैठक –</u>

23 अप्रैल 2022 को महाविद्यालय द्वारा हिंदी विभाग की छात्राओं के साथ अध्यापक-अभिभावक बैठक प्रातःकाल 10:00 बजे से लेकर 01:00 बजे तक संपन्न हुई। बी.ए.(विशेष) हिन्दी, तृतीय वर्ष की छात्राओं एवं अभिभावकों से डॉ. आरती सिंह, डॉ. मंजु शर्मा,डॉ. रक्षा गीता, डॉ. संजय सिंह, डॉ.सुरेश चंद मीणा ने सुबह 10:00 – 11:00 http://meet.google.com/ssy-vhhg-dys लिंक के माध्यम से वार्तालाप किया । द्वितीय वर्ष की छात्राओं एवं अभिभावकों से सुबह 11:00 बजे से 12:00 बजे तक लिंक – https://meet.google.com/jqb-ziag-gub के माध्यम से डॉ. विभा ठाकुर, डॉ. लवकुश कुमार, डॉ. हेमंत रमण रवि ने बातचीत किया। डॉ. ब्रह्मानंद एवं सुश्री बलजीत कौर, डॉ. ममता चौरसिया, डॉ. रितु, डॉ. संजय सिंह 12:00-01:00 बजे तक https://meet.google.com/xkw-xzit-htu प्रथम वर्ष की बैठक में सम्मिलित थे। अभिभावकों के प्रश्नों का समुचित उत्तर देने के साथ ही छात्राओं के बहुमुखी विकास पर चर्चा हुई और अंत में प्रतिपुष्टि फॉर्म भरे गए । इस बैठक में आर्थिक समस्या से जूझ रहे विद्यार्थियों को कैसे सक्षम किया जा सकता है, जिससे कि वे भविष्य में अपने मनपसंद पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सके, इस पर भी चर्चा हुई। विद्यार्थियों के चहुंमुखी विकास के लिए अन्य माध्यमों से ज्ञानार्जन एवं विद्यार्थियों को और भी ज्यादा उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु तैयार करने एवं विकास पथ पर अग्रसर करने पर भी गभीरतापूर्वक विचार किया गया। बैठक में सम्मिलित छात्राओं और उनके अभिवावकों ने सक्रिय रूप से भूमिका निभाई तथा विद्यार्थियों से संबंधित विविध मुद्दों पर संकाय सदस्यों के साथ विचार-विर्मश करके बैठक को सार्थकता प्रदान की गई। शिक्षकों और अभिभावकों ने विद्यार्थियों की पढ़ाई को लेकर गंभीर बातचीत की एवं अभिभावकों का महाविद्यालय और उनके बच्चों की पढ़ाई से संबंधित.फीडबैक https://docs.google.com/forms/d/1r-OVIcxMLj2o4giULEWycEF9lpE6Ed9vAfd3buDC154/edit लिये गए। बैठक प्रभावशाली, उपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण रही ।

हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं –

(1) 04 मार्च 2022 रचनात्मक लेखन एवं स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता

(I) रचनात्मक गद्य लेखन प्रतियोगिता परिणाम

प्रथम – फिजा खातून (हिंदी आनर्स द्वितीय वर्ष) क्रमांक (16033)
द्वितीय – मानसी रावत (हिंदी आनर्स द्वितीय वर्ष) क्रमांक (16005)
तृतीय – चंचल शर्मा (हिंदी आनर्स द्वितीय वर्ष) क्रमांक (16021)

(II) स्वरचित पाठ काव्य प्रतियोगिता परिणाम

प्रथम – आकांक्षा कोटनाला, हिंदी आनर्स द्वितीय वर्ष (क्रमांक-20516048)
द्वितीय – मानसी रावत, हिंदी आनर्स द्वितीय वर्ष (क्रमांक-20516005)
तृतीय – अंजलि, हिंदी आनर्स तृतीय वर्ष (क्रमांक-19516048)
सांत्वना – प्रिया थापा, हिंदी आनर्स द्वितीय वर्ष (क्रमांक-20516007)

(2) 08 मार्च 2022 – निबंध प्रतियोगिता, स्थान कक्ष संख्या 9 TRI

विषय : 'वर्तमान संदर्भ में ढाई आखर प्रेम का '

प्रथम – आकांक्षा 20516048
द्वितीय – काजल कुमारी 20516059
तृतीय – मानसी 20516005

(3) 09 मार्च 2022-वाद विवाद प्रतियोगिता, स्थान- कक्ष संख्या TRI-01

विषय : **'भारत के विश्वगुरु बनने के मार्ग में आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना बाधा है '**

प्रथम स्थान : (1) निशा (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष ,रोल नम्बर-21516001

(2) नीतू (हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष, रोल नम्बर - 19516053

द्वितीय स्थान : (1) काजल (हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष, रोल नम्बर - 20516050

(2) मानसी (हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष, रोल नम्बर :-20516005

तृतीय स्थान : (1) भारती (हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष, रोल नम्बर:-20516046

(2) नन्दिनी (हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष रोल नम्बर:-20516002

(4) 12 मार्च 2022 पेपर प्रस्तुतिकरण

प्रथम पुरस्कार - दीक्षा

द्वितीय पुरस्कार - डिंपल

तृतीय पुरस्कार - इशिका

(5) 13 अप्रैल 2022 एकल - गायन प्रतियोगिता

(i) भजन, देशभक्ति, लोकगीत

प्रथम पुरस्कार - शल्यास्था

द्वितीय पुरस्कार - शांभवी

तृतीय पुरस्कार - दिव्या बुढ़

प्रोत्साहन पुरस्कार - कीर्तिका

(ii) **गजल, नज़्म, रैप**

प्रथम पुरस्कार - फिज़ा खातून

द्वितीय पुरस्कार - आकांक्षा कोटनाला

तृतीय पुरस्कार - मानसी

प्रोत्साहन पुरस्कार - विशाखा

(6) **19 अप्रैल 2022 - नृत्य प्रतियोगिता**

लोक नृत्य श्रेणी :-

प्रथम स्थान : आकांक्षा कोटनाला (हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष ,रोल नम्बर-20516048)

द्वितीय स्थान : दीपाली (हिंदी विशेष,प्रथम वर्ष , रोल नम्बर -21516010)

तृतीय स्थान : काजल (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष, रोल नम्बर-21516036)

वेस्टर्न नृत्य:-

प्रथम स्थान : (1) नफीसा (हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष, रोल नम्बर - 20516019

(2) दिव्या (हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष, रोल नम्बर 19516053

द्वितीय स्थान : नेहा नवांनी (हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष ,रोल नम्बर - 20516018)

तृतीय स्थान : ज्योति (हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष ,रोल नम्बर- 20516043)

(7) **25 अप्रैल 2022 - चित्रकला प्रतियोगिता**

स्थान- कक्ष संख्या AB 12

प्रथम पुरस्कार-विशाखा कुमारी (हिंदी विशेष ,द्वितीय वर्ष ,रोल नम्बर-20516034)

द्वितीय पुरस्कार-भारती (हिंदी विशेष ,द्वितीय वर्ष ,रोल नम्बर- 20516046)

तृतीय पुरस्कार- राधा कुमारी (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष, रोल नम्बर- 21516022)

सांत्वना तृतीय पुरस्कार- अंजली (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष, रोल नम्बर- 21516047)

(8) **26 अप्रैल 2022 - सूचनापट्ट सजावट प्रतियोगिता**

प्रथम स्थान : समूह 1

मीनाक्षी (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष, रोल नम्बर-21516004)

रिंकी कुमारी (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष, रोल नम्बर-21516005)

मनोरमा कुमारी (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष, रोल नम्बर-21516002)

प्रिया (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष, रोल नम्बर-21516033)
मुखी (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष, रोल नम्बर-21516011)

द्वितीय स्थान : समूह 2

मानसी (हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष ,रोल नम्बर-20516005
विशाखा कुमारी (हिंदी विशेष ,द्वितीय वर्ष ,रोल नम्बर-20516034)
काजल कुमारी (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष, रोल नम्बर-21516059)
शशि द्विवेदी (हिंदी विशेष ,द्वितीय वर्ष ,रोल नम्बर-20516016)
प्रियांशी शर्मा (हिंदी विशेष तृतीय वर्ष- 19516020)

तृतीय स्थान:समूह 3

भारती (हिंदी विशेष ,द्वितीय वर्ष ,रोल नम्बर-20516043)
नफीसा (हिंदी विशेष ,द्वितीय वर्ष ,रोल नम्बर-20516019)
सलोनी (हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष, रोल नम्बर-21516043)

(9) **15 मार्च 2022- स्लोगन (नारा) लेखन प्रतियोगिता**

प्रथम- भारती, हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष (अनुक्रमांक- 20516046)
द्वितीय- चंचल शर्मा ,हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष (अनुक्रमांक-20516021)
तृतीय- शशि द्विवेदी ,हिंदी विशेष तृतीय वर्ष (अनुक्रमांक-19516016)
सांत्वना- मानसी ,हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष (अनुक्रमांक-20516005)

(10) **पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता**

प्रथम- पूजा कुमारी,हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष (अनुक्रमांक-20516050)
द्वितीय- काजल कुमारी, हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष (अनुक्रमांक-20516059)

इसके साथ ही 12 अप्रैल 2022 को साहित्यक मौखिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सफलतापूर्वक संपन्न किया गया।

हिंदी विभाग, कालिंदी महाविद्यालय की छात्राओं का दिल्ली विश्वविद्यालय के साथ अन्य विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों के द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में सक्रिय भागीदारी रहीं-

1. नफीसा, हिंदी विशेष तृतीय वर्ष
- रिदमिक योगा, मिरांडा हाऊस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, तृतीय पुरस्कार

2. विधि जैन, हिंदी विशेष तृतीय वर्ष
- निबंध लेखन प्रतियोगिता, सेंट स्टीफन महाविद्यालय,दिल्ली,सांत्वना पुरस्कार ।
- कविता लेखन प्रतियोगिता,मैत्रेयी महाविद्यालय,दिल्ली,सांत्वना पुरस्कार।
- रंगोली मेकिंग प्रतियोगिता, इंस्टिट्यूट ऑफ़ होम इकोनॉमिक्स महाविद्यालय, प्रमाण पत्र ।
- स्लोगन प्रतियोगिता, एनएसएस पीजीडीएवी कॉलेज, प्रमाण पत्र।
- बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट प्रतियोगिता, महाराजा अग्रसेन, प्रमाण पत्र।
- विविध स्नैप फोटोग्राफी प्रतियोगिता, माता सुन्दरी कॉलेज, प्रमाण पत्र।
- कविता पाठन प्रतियोगिता, देशबंधु कॉलेज, प्रमाण पत्र।
- फोटोग्राफी प्रतियोगिता, शहीद राजगुरु कॉलेज, प्रमाण पत्र।
- स्लोगन लेखन प्रतियोगिता, कालिंदी -पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता, एस. एम. शेट्टी कॉलेज ऑफ साइंस, कॉमर्स एवं मैनेजमेंट स्ट्डीज, मुंबई, प्रमाण पत्र
- स्लोगन लेखन प्रतियोगिता, इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय स्तर, दूसरा स्थान
- स्लोगन लेखन प्रतियोगिता, शिवाजी महाविद्यालय, दिल्ली,प्रमाण पत्र
- वानस्पतिक रंगोली प्रतियोगिता, किरोड़ीमल महाविद्यालय,दिल्ली,दूसरा स्थान
- स्लोगन लेखन प्रतियोगिता, शिवाजी, प्रमाण पत्र
- निबंध लेखन प्रतियोगिता, व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ, उस्मानाबाद, महाराष्ट्र, प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार राशि
- निबंध प्रतियोगिता, शंकराव पाटिल विश्वविद्यालय स्तर, भूम, महाराष्ट्र
- प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, रा.उ.मा. विद्यालय स्तर, लोहारवा, राजस्थान, प्रमाण पत्र
- हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता, मॉडर्न काला विज्ञान और वाणिज्य, शिवाजीनागर, पुणे, प्रमाण पत्र
- स्वयं रचित काव्य प्रतियोगिता, श्री गुरुनानक देव खालसा, प्रमाण पत्र -स्लोगन लेखन प्रतियोगिता, किरोड़ीमल महाविद्यालय, प्रमाण पत्र

3. विशाखा कुमारी, हिंदी विशेष तृतीय वर्ष
- देशभकि कविता प्रतियोगिता, कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स, दिल्ली, प्रथम स्थान, पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र।
- कविता वाचन प्रस्तुति, राष्ट्रीय सेवा संघ (रामानुजन एवं कालिंदी महाविद्यालय, प्रमाण पत्र।

- अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फाउंडेशन, प्रमाण पत्र
- ओपन माइक प्रतियोगिता, शहीद भगत सिंह कॉलेज, प्रथम स्थान
- नदी गान वाचन राष्ट्रीय प्रतियोगिता, शहीद भगत सिंह कॉलेज, प्रथम स्थान
- निबंध लेखन प्रतियोगिता,उस्मानाबाद हिन्दी परिषद, प्रमाण पत्र
- पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता, शिवाजी कॉलेज, दिल्ली, द्वितीय स्थान

कालिंदी महाविद्यालय की स्थापना वर्ष से लेकर आज तक हिंदी साहित्य परिषद् ने छात्राओं के बहुमुखी विकास, सर्जनात्मक कौशल, सांस्कृतिक प्रतिभा, रचनात्मक गतिविधियों को एक ऐसा मंच प्रदान किया है, जिससे कि वे भविष्य में ना केवल सामाजिक, आर्थिक, वैयक्तिक रूप से सक्षम हो बल्कि आदर्श नागरिक बनकर समाज और राष्ट्र की उन्नति में अपना अमूल्य योगदान दे सकें। हिंदी साहित्य परिषद् विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रोत्साहन स्वरूप प्रमाण-पत्र व पारितोषिक प्रदान सम्मानित करती है।

धन्यवाद

हिंदी साहित्य परिषद्
हिंदी विभाग

हिंदी साहित्य परिषद् के कार्यकारिणी सदस्य और हिंदी विभाग के अध्यापक

सूचनापट्ट सजावट प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी

स्वरचित कविता प्रतियोगिता में प्रतिभागी कविता पाठ करते हुए

पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में पोस्टर प्रदर्शित करते प्रतिभागी

हिंदी विभाग की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित समापन समारोह में मुख्य अतिथि प्रोफेसर अनिल राय का स्वागत करते हुए विभाग के प्राध्यापक-गण

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित समापन समारोह में दीप प्रज्वलित करते प्रो. अनिल राय और हिंदी विभाग के अध्यापक

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित समापन समारोह में छात्राओं को संबोधित करते प्रो. अनिल राय

समापन समारोह में प्रतिभागी

समापन समारोह में स्नातक अतिम वर्ष की छात्राएं और हिंदी विभाग के अध्यापक

छात्रा को प्रमाण पत्र देते हुए डॉ. आरती और डॉ. मंजु शर्मा

छात्रा को प्रमाण पत्र देते हुए डॉ. रितु और सुश्री बलजीत कौर

प्रमाण पत्र वितरित करती हुईं डॉ. रक्षा गीता और सुश्री बलजीत कौर

समापन समारोह में छात्रा को उपहार भेंट करते हुए डॉ. संजय कुमार और डॉ. ममता चौरसिया

समापन समारोह में छात्राओं के साथ डॉ. सुरेश चंद मीणा, डॉ. आरती और डॉ. मंजु शर्मा

समापन समारोह में छात्रा को उपहार भेंट करते हुए डॉ. ब्रह्मानंद और डॉ. लवकुश

समापन समारोह में छात्रा को उपहार भेंट करते हुए डॉ. ब्रह्मानंद, डॉ. हेमंत रमन रवि और डॉ. संजय कुमार

डॉ. मोहिनी श्रीवास्तव के विदाई के अवसर पर उपहार भेंट करते हुए हिंदी विभाग के अध्यापक

कविताएँ

ये मजहब की बात है

ये मजहब की बात है

दिन ढलेन रात है

ऊंची श्रृंखलाओं सी बेड़ी

जिसमें बंधी न जाने कितनी ही जात है

ये मजहब की. . . . . .

तालमताल ठोक के

प्रभु भजन और याअल्लाह बोल के

सितम ढले रहें शिक्षाओं की ओट में

दीपक की बनी उसी ज्योत में

जहां सिखाई जाती बुनियादी बात है

ये मजहब की. . . . . .

पहनावा तुम्हारा भी रोका जाएगा

जब ताल्लुक महिला पर आएगा

शान ओ शौकत के पिछलग बने घूमोगे

इसी तानाशाह में एक दिन भूनोगे

अस्तित्व तुम्हारा चीखों में उफाने मरेगा

सामाजिक रूढ़ियों की ये वारदात है

अरे भाई ये मजहब की . . . . . .

सांत्वना तुम्हारे साथ है

चोटिल हुई भले ही गरीबी से औकात है

रूदन से जूझी तुम्हारी बे बसरात है

तुम धोखा खाकर भी हस्ते हो

अरे वाह रे मानुष क्या बात है

हां हां ये मजहब की. . . . . .

गुर्राए तो दबोचे जाओगे

फिर इसी शहर में खुद कोला वारिश पाओगे

कल्पना में भी सोच ली गर ये बात

तुम्हारी मेरी सबकी एक जात

राजा को प्रजा पर वार करता ही पाओगे

अच्छा तुम अब एक जात लाओगे

ये मजहब की. . . . . .

मानसी

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

जिंदगी

छोटी सी जिंदगी है

हर हाल में खुश रहो।

छोटी सी जिंदगी है,

हर बात में खुश रहो।

जो चेहरा पास ना हो,

उसकी आवाज में खुश रहो।

कोई रूठा हो तुमसे,

उसके इस अंदाज में भी खुश रहो।

जो लौट के नहीं आने वाले,

उन लम्हों की याद में खुश रहो।

कल किसने देखा है,

अपने आज में खुश रहो।

खुशियों का इंतजार किसलिए

दूसरों की मुस्कान में खुश रहो,

क्यूँ तड़पते हो हर पल किसी के साथ के लिए

कभी तो अपने आप में खुश रहो

छोटी सी तो जिन्दगी है।

हर हाल में खुश रहो

मणि कुमारी

हिन्दी विशेष, प्रथम वर्ष

राजनीति में भ्रष्ट हो जाओ

आओ आओ

राजनीति में भ्रष्ट हो जाओ

सुख की मिलेगी रोटी

गरीबों की हाड़ मांस और बोटी

रक्त लहू और पसीने को उनकी

तुम बेबाक उड़ाओ

आओ आओ. . . . . .

पांच साल के शासन के कार्य

कुछ महीनों में ही करवाओ

दुखियों की पीड़ा को बस

उपर से ही सहेजे जाओ

झूठे वादे में ही खुद को

प्रगतिशील बताओ

आओ आओ . . . . . .

महंगाई में बेरोजगारी का विष मिलाओ

कुछ करो या ना करो

साथ रहो या पीछे से ही वार करो

लेकिन धर्म के नाम पर

जनता को बेवकूफ बनाओ

आओ आओ . . . . . .

इस साल के वादे को

बार बार दोहराओ

बिजली पानी और व्यवस्था

सबको हर वर्ष बस सुलभ बनाओ

अपनी करतूतों के ब्योरों को

दूसरों पर थोपे जाओ

भीगी बिल्ली की तरह

बस म्याओ म्याओ बतियाओ

आओ आओ . . . . . .

मानसी रावत

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

सैनिक का खत

सुन माँ, यदि मैं ना लौटा तेरे पास

यादें मेरी तुम सहेज लेना कुछ खास

कुछ रखना तुम खिलौने, कुछ कपड़े रखना

खून से लथपथ मेरी वर्दी को सीने से लगाए रखना

माँ नाराज ना होना तुम मुझसे, फिर से कहता हूँ...

अब तो जाना ही होगा मुझको क्योकि मैं भारत माँ का भी बेटा हूँ...

तू सपने बुनती थी कि एक दिन मैं भी घोड़ी चढ़ जाऊँगा

चिंता ना कर तू तिरंगे में लिपटा हूँ तो क्या हुआ बारात साथ जरूर लाऊँगा

रो-रोकर मेरी शहादत का ना तू मज़ाक बनाना

भाइयों से कहना कि मेरी कुर्बानी को ना कभी भूलाना

धरती की गोद में आज मैं लेटा हूँ...

अब तो जाना ही होगा मुझको क्योकि मैं भारत माँ का भी बेटा हूँ...

सह लूगा मैं गोली, बारुद पर अपनी धरती माँ को लुटता

ना देख पाऊँगा

लगा आखिरी साँस तक, तिरंगे की शान बढ़ाऊँगा

मेरी वर्दी को लाल जोड़े में आई तो मेरी दुल्हन समझ लेना

मैं लोटूंगा जरूर कहकर छोटी बहन का भी दिल रख लेना

अलविदा आज मैं सबको कहता हूँ...

अब तो जाना ही होगा मुझको क्योंकि मैं भारत माँ का भी बेटा हूँ...

विधि जैन

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

दुनिया

यही है मेरी दुनिया,

यही है मेरी ताकत...

यह नहीं तो मैं नहीं,

इनका तो कुछ कहना नहीं...

मेरे जीवन की हर खुशी

मेरे निराश होने पर सांत्वना देने वाली,

मेरी जरुरतों को पूरा करने वाली,

मुझे हर मोड़ पर हिम्मत देने वाली,

मेरे कुछ गलत करने पर डांटने वाली,

फिर कुछ पल निराश होकर मानने वाली...

यही है मेरी दुनिया,

यही है मेरी ताकत

मुझे पलपल समझने वाली,

मुझे प्यार देने वाली,

मेरा ख्याल रखने वाली,

यह है मेरी अतिप्रिय दादी...

मेरी मां से भी बढ़कर मेरी दादी

यही है मेरी दुनिया,

यही है मेरी ताकत...

मेरे जीवन की खुशी, के जाने के बाद

वही थी एक जिन्होंने मुझे नई खुशी दी,

वही तो है मेरी दुनिया, मेरी दादी...

जो करती है मुझे निःस्वार्थ प्रेम

वही है जीवन जीने का आधार

यही है मेरी दुनिया,

यही है मेरी ताकत...

प्रिया थापा

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

भारत विशेष

संघर्षशील स्वतंत्रता के सौ स्वराज वर्षगांठ समेट,

अमृतकाल के दौर में

करेगा भारत प्रवेश,

ओत-प्रोत सहज विकास

के समृद्ध आंकलन से,

होंगे नित नव – निर्माण

भारत के संकलन में...

नई परिपाटी पर लिखा

जाएगा नया परिवेश,

अमीरी-गरीबी, ऊँच-नीच

का नहीं होगा द्वेष,

स्वच्छता, स्वस्थता,

घर, शिक्षा, रोजगार,

मिलेंगे जन – मानस को

अधिकार मूलभूत विशेष...

बचपन जहाँ किताबों में होगी,

त्याग बालश्रम का भेष

होगा घर – घर शौचालय,

स्वस्थ होंगी नारियां हर प्रदेश,

जहाँ नहीं बिखरेगी आबरू

सड़कों पर बन अवशेष ,

एक बुलंद आवाज़ होगी

देगी सशक्तिकरण का संदेश...

जहाँ मुस्कुराएगा भविष्य खलिहानों में ,

सुस्ताती नदियाँ स्वच्छता के सिरहानों में,

अवनी के सीने पर लगा

धानी हरियाली का मीठा मरहम,

कर प्रकृति का संरक्षण

भारत के कण-कण की भूख मिटानी है,

चीरकाले प्रदूषित बादलों को

समुद्र तल तक स्वच्छता फैलानी है...

नहीं बंधेगी सामाजिकता

गुमनाम कुरीतियों की बेड़ियों में,

मानव चिंतन होगा, कुशाग्र,

सजग, सहनशील प्राणियों में,

तकनीक हित कर होगा

नहीं उपयोग घातक श्रेणियों में,

अवसाद के आभासी दुनिया में नहीं,

मिलेंगे मानव उच्चतम जीवनियों में...

जहाँ मानवता मानव को बलदेगी

हर मुश्किल का हल देगी,

समानता के पथ को स्वीकार

मिटा द्वेष, दम्भों को

एक उन्मुक्त कल देगी,

नहीं घुटेगा गला गर्भ में

अधिकार जीवन का,

हर लिंग को पहचान सबल देगी...

सैन्य बल महान होगा

पर फ़िर भी भारत युद्ध विराम होगा,

अमन, शांति का दूत

होगा भारत का हर सपूत,

लेकिन कोई वार करे तो

फ़िर महाभारत घमासान होगा,

इतिहास के चिरकाल तक

भारत का विश्व गुरु सम्मान होगा...

मेरा भारत महान होगा...

संघर्षशील स्वतंत्रता के

सौ स्वराज वर्षगांठ समेट,

अमृतकाल के दौर में जब

करेगा भारत प्रवेश,

दो हजार सैंतालीस में,

ऐसा होगा मेरा भारत विशेष...

ऐसा होगा मेरा भारत विशेष...

विशाखा कुमारी

हिन्दी विशेष, द्वितीय वर्ष

ये रद्दी

ये रद्दी भर कागज़, दीवारों पर जो उतरे हैं,

दिल पर, भी, यूहीं उतरेगें

इतना तो तुम कभी बतलाओ,

ये रद्दी भर के नारे

झूठी जुबान से निकले हैं,

ये सत्य कभी बन पाएँगे,

इतना तो तुम कभी बतलाओ,

ये रद्दी भर की उम्मीदें

आँखों में पानी लाती हैं,

तल गहरे जो कर जाती हैं,

मन की जो आस बढ़ाती है,

तुम पर विश्वास दिलाती है,

परिपूर्ण इन्हें कर पाओगे,

इतना तो तुम कभी बतलाओ,

अरे सुनिएगा,

आए चुनाव, आए जनाब,

हाए! समाज,

चलो मूर्ख इन्हें ठहरायेंगे ,

अब गाड़ी से चलने वाले भी,

पैदल चलकर आएंगे,

फिर थिरक-थिरक,

मौकापरस्त

कुटिया का द्वार बजाएंगे,

भोजन कर, सामंजस्य बना,

कर दोनों एकाएक मिला,

नेता गर्दन को झुकाएंगे,

फिर भीख मांग,

कर वार्तालाप भूमि से नयन मिलाएंगे,

अरे! जिनकी जड़ें मज़बूत नहीं,

वे पेड़ कहाँ टिक पाएंगे,

बंजर भूमि है, नेताजी,

मजदूर मकाँ बना पाएँगे?

ये रद्दी भर के कागज़ हैं,

दीवारों पर रह जाएँगे

नंगे शरीर, संग कंपन है,

वे नंगे ही रह जाएंगे,

जो काला पैसा खाते हैं,

वेशर्म कहाँ कर पाएँगे

ये रद्दी भर के काज़म कागज़ हैं,

दीवारों पर रह जाएंगे,

वे रद्दी भर के नेता हैं,

जो मुझको ना सुन पाएँगे,

वे मुजरिम हैं,

इस भारत के

जो राम नाम पर फूट करें

वे मुजरिम हैं इस भारत के

जो अल्लाह कहकर, टूट पड़े
वे फिर से मुड़कर आएँगे
जातिगत भेद बताएंगे
वर्गों के नाम पर वोट बना
जनता को फिर भड़काएँगे
क्या विश्व गुरू है, नेताजी
संयम को कब अपनाएँगे?
ये रद्दी भर के कागज़ हैं
दीवारों पर रह जाएंगे.....
वे रद्दी भर के नेता हैं,
जो मुझको म सुन पाएंगे,
अरे दलबदलू ये चेहरे हैं,
ये दिल में नहीं बस पाएंगे
ये पैर पसारे बैठे हैं
गद्दी पर रौब जमाएंगे
अंतिम कटाक्ष पर ज़ोर करूँ
कविता से मैं अब शोर करूँ
अरे फिर चुनाव है, आने को
आवाज़ सुनो, तो सुन लेना
मैं कहती हूँ, तुम गोर करो
जो आसमान को देख रहे
पत्थर से ठोकर खाएँगे
जो दारू घर घर बेच रहें
जनता की, गाली खाएँगे
और जो देश के काम ना आ पाएँ
वे खुद रद्दी बन जाएंगे
वे रद्दी भर के नेता हैं
जो मुझको ना सुन पाएंगे.....

अकांशा कोटनाला
हिन्दी विशेष, द्वितीय वर्ष

मातृभूमि

आज तिरंगा फहराता है अपनी पूरी शान से
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से...
आज़ादी के लिए हमारी लंबी चली लड़ाई थी
लाखों लोगों ने प्राणों से कीमत बड़ी चुकाई थी...
व्यापारी बनकर आएं और छल से हम पर राज किया
हमको आपस में लड़वाने की नीति अपनाई थी...
हमने अपना गौरव पाया, अपने स्वाभिमान से
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से...
गांधी, तिलक, सुभाष, जवाहर का प्यारा यह देश है
जियो और जीने दो का सबको देता संदेश है
प्रहरी बनकर खड़ा हिमालय जिसके उत्तर द्वार पर
हिंद महासागर दक्षिण में इसके लिए विशेष है...
लगी गूँजने दसों दिशाएँ वीरों के यशगान से
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से...
हमें हमारी मातृभूमि से इतना मिला दुलार है
उसके आँचल की छैयाँ से छोटा ये संसार है
हम न कभी हिंसा के आगे अपना शीश झुकाएँगे
सच पूछो तो पूरा विश्व हमारा ही परिवार है...
विश्व शांति की चली हवाएँ अपने हिंदुस्तान से
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से...

प्रियांशी शर्मा
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

अमर सपूत

भारत माँ के अमर सपूतो, पथ पर आगे बढ़ते जाना

पर्वत, नदिया और समन्दर, हँस कर पार सभी कर जाना...

तुम में हिम गिरी की ऊँचाई सागर जैसी गहराई है

लहरों की मस्ती और सूरज जैसी तरुनाई है तुममें...

भगतसिंह, राणा प्रताप का बहता रक्त तुम्हारे तन में

गौतम, गाँधी, महावीर सार हतासत्य तुम्हारे मन में...

संकट आया जब धरती पर तुमने भीषण संग्राम किया

मार भगाया दुश्मन को फिर जग में अपना नाम किया...

आने वाले नए विश्व में तुम भी कुछ करके दिखाना

भारत के उन्नत ललाट को जग में ऊँचा और उठाना है...

प्रियांशी शर्मा

हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

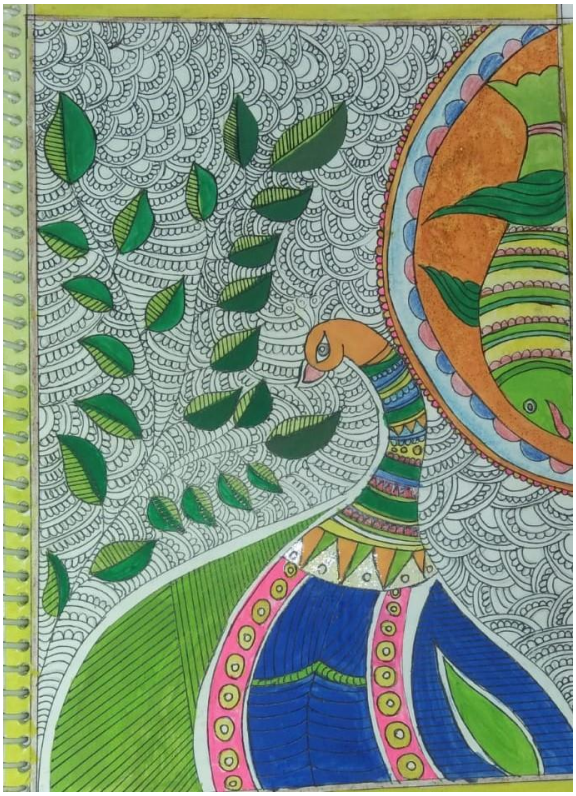

मानवता का प्रथम गुण

आज फि रमन किया की रोलूं,

रोलूं अतीत के साथ

आत्मा के साथ अपने अत:द्वन्द के साथ

मन हल्का करना कोई गुनाह है क्या ?

जब हसना सबके साथ

तो रोना क्यों अकेले?

मैं शामिल करती हूँ अपने दुःख-दर्द में

अपने मित्रों को

अपने ईश्वर को

और इस पूरे संसार को

तुम भी मेरे दुःख में मनुष्य बनकर आना

मेरे इस दुःख को

अपनी मानवता के स्पर्श से

करुणामयी कर देना

मेरे रोने पर तुम भी रो लेना

किसी के दुःख में तुम हँसना मत,

प्रफुल्लित मत होना

जिस-जिस दिन तुम

दूसरों के दुःख में हंसोगे

उस-उस दिन मनुष्यता का हनन होगा

मेरे मनुष्य तुम दूसरों के दुःख में

दुखित होना

और सुख में सुखी

यही मानवता का प्रथम गुण है...

शांभवी, हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

धन की चंचलता

हे मनुष्य! तुझे तेरी कहानी बताऊं

तुझे तेरे जीवन से रूबरू करवाऊं

सदी सदी की बात है

सदी सदी की गाथा

वक्त के चलते बदल जाते हैं

व्यक्ति, पैसा व रिश्ता नाता...

पैसा आया तू घमंडी बनता गया

रिश्ते नाते भूल, बस आगे बढ़ता गया...

भूल गया तू, पैसा हाथ का मैल है

जाता और वापस आता है

परंतु इसकी वजह से

जिस रिश्ते मैं आए दरार

वो नाता भी क्या नाता है?

पैसों के लिए तू अभिमानी बन जाता है

अभिमान मैं चूर, तुझे खुदा भी नजर नही आता है !

पर वक्त का पहिया घूमकर, वापस आता है

जहां पर तू था, तुझे वही पटक लाता है...

आखिर में वृद्ध अवस्था के समय

तुझे अपनी गलती पर अफसोस होता है...

जब जाने का समय आता है

तू तब अपने किए पर रोया है...

चाह कर भी तू अपनी गलती का

पश्चाताप ना कर पाता है

अपने बिखरे रिश्ते जोड़ने में

तू जी जान से जूट जाता है...

अंत: मे तू अपनी गलती के बोझ तले,

तू संसार छोड़ जाता हैं...

जिस पैसों के लिए तूने अपनो को छोड़ा

वह तुझे छोड़, मिट्टी में मिल जाता है...

लक्ष्मी शर्मा

बी.ए इतिहास विशेष, तृतीय वर्ष

वीरों का नगमा

जिसे वीरों ने गाया था वो नगमा फिर से गाना है
सभी आँखों मैं अमनो चैन का सपना जगाना है।
वतन पर मरने मिटने के शहादत के जो किस्से हैं
किस्सों को हक़ीकत में बदल कर फिर दिखाना है।
कोई बिस्मिल कोई अश्फ़ाक कोई खुदीराम बन जाए

हमें भी बाजुओं का ज़ोर अपनी आज़माना है।
शहीदों ने जिसे सींचा लहू अपना बहाकर के
उसी धरती को दुल्हन सा हमें फिर से सजाना है।
कोई जाति, कोई मज़हब, कोई भी धर्म हो अपना,
सभी मिलकर चलें मिलकर रहें सजाएं मन में ये सपना।
मिटें नफ़रत की दीवारें, सजाएँ प्यार की महफ़िल
दिलों में देश बस्ता हो, धड़कता हो वही हिलमिल।
तमन्ना हर घड़ी दिल में कि मैं क़ुर्बान हूँ उस पर
बहाया खून शहीदों ने, हुए क़ुर्बान वो जिस पर।
मेरी हर साँस कहती है कि ये सौगात बन जाए,
कफ़न लिपटे तिरंगे में तो फिर तो बात बन जाए।
मुझे अंतिम क्षणों तक मातरम् वन्दे ही गाना है,
है मुझ पर कर्ज़ मिट्टी का, मुझे उसको चुकाना है।
शहीदों ने जिसे सींचा लहू अपना बहाकर के,
उसी धरती को दुल्हन सा हमें फिर से सजाना है।।
ये धरती प्यार की धरती है, ये दुलार की धरती,
ये धरती अमन की धरती है, ये संस्कार की धरती,
ये धरती बोस की धरती है, ये गाँधी की है धरती।
इसी की धूल में पलकर हज़ारों रत्न पाएँ हैं,
इसी की धूल का टीका सदा करती ये माएँ हैं।
इसी की धूल को माथे से मुझको फिर लगाना है।
शहीदों ने जिसे सींचा लहू अपना बहाकर के,
उसी धरती को दुल्हन सा हमें फिर से सजाना है।।

चाहत वत्स
बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

मेरी साथी

रुको ठहरो...

तुम बेहद खूबसूरत हो

मेरी प्रिय साथी,

सुकून से भरी हुई प्रकृति के पास तुम्हारा मेरा साथ है...

तुम हिलती हो, महकती हो मेरे भीतर

एक प्यारी सी याद की तरह

साथ रहती हो हर पहर...

तुम सभी को भाँति हो

अपनी प्यारी एहसास हमें दे जाती हो,

प्रकृति की गोद में पली बड़ी

तुम मेरी प्रिय साथी हो...

क्यों गिरती हो तुम?

वही रुक जाओ ना

थोड़ा सम्भलो और

यु ही खिलती नजर आओ ना

में कहती हूँ कोई नहीं तुम्हारा इस जहां में...

मैं तुम्हारी छवि हूँ,

मुझे देख कर तुम भी मुस्कुराओं ना...

क्यों टूटती हो तुम?

क्यों बिखरती हो तुम?

तुम भी सवर जाओ ना

तुम्हारी छवि हूँ मैं,

तुम्हारी साथी...

यू ही मुस्कुराओं ना...

सब की प्यारी तुम

मत मुरझाओं ना

प्रकृति की गोद में पली बड़ी

तुम मेरी प्रिय साथी बन जाओ ना...

तुम बिन धरती रूठी रहती हैं...

तुम बिन मिट्टी सूखी रहती हैं...

तुम आती हो तो बहार लाती हो,

तुम सब को भाँति हो

मेरी प्रिय साथी

स्वर्ग सा सुन्दर तुम्हारा जहां हैं,

तुम बेहद खूबसूरत नज़र आती हो...

तुम मेरी प्रिय साथी हो...

अंजली कुमारी

हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

स्लोगन (नारा)

"हर व्यक्ति अपना कार्य ईमानदारी से करें,

सत्य का साथ देने से कभी ना डरे, तभी संभव होगा देश का विकास,

जब देश का नागरिक भ्रष्टाचार एवं गरीबी को दूर करने का करेगा प्रयास।।"

"भ्रष्टाचार को दूर भगाना है,

जीवन में खुशहाली को लाना है,

भारत देश को आत्म निर्भर एवं समृद्ध बनाना है।।"

विधि जैन

हिन्दी विशेष, द्वितीय वर्ष

अदीबा, हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

लेख -

नारी सशक्तिकरण के विभिन्न स्वरूप

"आजादी की अनकही दास्तान" कहते हैं कि रूढ़िवादी सोच समाज तथा देश के विकास में बाधा होती है जैसे सती प्रथा और बाल विवाह।

जहां एक तरफ भारत में अनेकता में एकता जैसे विभिन्न धर्म, जाति के लोग एक साथ रहते हैं वही भारत में अंधविश्वास और रूढ़िवादी सोच अब भी मौजूद हैं जैसे छुआछूत। पहले के समय में बाल विवाह और सती प्रथा जैसी प्रथाएँ प्रचलित थीं और इन पर रोक लगाना आवश्यक हो गया था। सन् 1856 मे लॉर्ड डलहौजी ने दोनों प्रथाओं पर रोक लगाई।

उत्तर वैदिक काल में हमें कई विदुषी महिलाओं के बारे में जानने को मिलता है जैसे गार्गी, अपाला वही बाद के वैदिक काल मे महिलाओं की स्थिति बदलती हुई दिखाई पड़ती है। यहां से महिलाएं घर गृहस्थी तक सीमित होती गईं।

मध्यकाल में महिलाओं को पर्दे में रखा जाने लगा। इसी दौर में रजिया सुल्तान- पहली महिला शासिका आई।

1857 क्रांति के दौरान महिलाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया जैसे रानी लक्ष्मी बाई, बेगम हजरत महल ।

स्वतंत्रता संग्राम में कई महिलओं ने पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता हासिल की और कई वीरगति को प्राप्त हुई परंतु महिलाएं हमेशा से सामाजिक भेदभाव की शिकार रहीं । घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, मानसिक दबाव इत्यादि आज भी लैंगिक भेदभाव पूरे विश्व में हो रहे हैं । आधुनिक दौर में भी महिलाओं को वोट के

अधिकार पाने के लिए 200 वर्षों से अधिक का समय लगा और फिर 1836 में न्यूजीलैंड मे सर्वप्रथम यह प्रावधान आया।

भारत में तो महिलाओं को देवियों का दर्जा दिया गया है पर फिर भी स्थिति जस की तस रही। आजादी के बाद और विभाजन का दौरान महिलाओं के साथ वीभत्स घटनाएं घटी।।

महिलाओं को निरंतर कमजोर और उपयोगी वस्तु के भांति समझा जाता रहा है और घर तक सीमित किया जाता रहा है।

पर अब धीरे धीरे ही सही अब महिलाएं खुद ही अपनी हक की आवाज उठा रही हैं और अपनी जिदंगी की केंद्रीय भूमिका निभा रही हैं।

अनुजा वर्मा

बीए प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

आजादी की कही अनकही दास्तान

आजादी - जिसका हमारे देश के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है । बचपन से हमने आजादी की न जाने कितनी कहानियों को पढ़ा और सुना होगा। अपने विद्यालय के पाठ्यक्रमों में भी अनेक वीर और वीरांगनाओं की गाथा को पढ़ा और सुना होगा जिन्होंने अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। आजादी जिसका शाब्दिक अर्थ है स्वछंदता, स्वाधीनता एवं स्वतंत्रता अर्थात् आप पर किसी का भी किसी प्रकार से कोई नियंत्रण ना हो। परंतु ऐसी आजादी से मानव का संपूर्ण विकास संभव नही क्योंकि मानव एक सामाजिक प्राणी है।

अतः हम कह सकते हैं की जो हमारे अधिकार हैं उनकी स्वतंत्रता मिलना ही हमारी आजादी है और हमारे देश के इतिहास में कई समय ऐसे आए जब भारतवासियों ने अपने अधिकार के लिए वीरता दिखाते हुए पराधीनता के विरोध में अपने कदम बढ़ाए।

जब जब भारतवर्ष पर बाहरी शासकों ने अपना आधिपत्य जमाने के प्रयास किए तब तब हमारे देश के वीरों ने भारत की स्वाधीनता और रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

ऐसे ही थे हमारे एक वीर सपूत पृथ्वीराज चौहान । जब मुहम्मद गोरी ने भारत पर आक्रमण किया तब पृथ्वीराज ने उसे 16 बार पराजित कर क्षमा कर दिया और भारतवर्ष की पराधीनता से रक्षा की परंतु 17वीं बार जयचंद के अपने देश के प्रति गदारी की कारण पृथ्वीराज को पराजित होना पड़ा। युद्ध के बाद मुहम्मद गोरी उन्हें और उनके कवि चंद्ररदाई को बंदी बनाकर अफगान ले गया और उन्हें कई यातनाएं दीं। पृथ्वीराज चौहान की दोनों आंखें फोड़ दीं । उसने पृथ्वीराज चौहान की शब्दभेदी बाण चलाने की कला को अपने सामने आजमाने को कहा और यह मौका देख के चंद्ररदाई ने कविता कही कि -

चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्टप्रमाण,

ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान।

और सिर्फ इस कविता को सुनकर पृथ्वीराज चौहान ने कुशलता से ऐसा निशाना लगाया की बाण सीधा मुहम्मद गोरी के सीने में लगा। जिसके बाद पृथ्वीराज चौहान और उनके कवि ने अपना आत्मबलिदान दे दिया ।

ऐसे पराक्रमी और कुशल कलाओं से भरे थे पृथ्वीराज चौहान और उनके कवि।

भारतीय इतिहास में देश की रक्षा और स्वाधीनता के लिए अपने प्राण को न्यौछावर करने वाले वीर मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप का नाम आते ही हर भारतवासी को गर्व होता है। महाराणा प्रताप पराक्रम और शौर्य की एक मिसाल हैं। ऐसे वीर जिन्होंने जंगलों में रहना स्वीकार किया परन्तु अपनी स्वाधीनता को त्याग दासता को नहीं स्वीकारा । उन्होंने देश और धर्म की स्वाधीनता के लिए सबकुछ बलिदान कर दिया । मुगल साम्राज्य अपना राज्य बढ़ा रहा था और इसीलिए वह भारत के राजाओं को अपने आधिपत्य में कर रहा था । इसी प्रयास में 30 वर्षों की लगातार कोशिशों के बावजूद मुगलराज महाराणा प्रताप को अपने आधीन न कर सका ।

महाराणा जी का जन्म 9 मई 1540 को कुंबलगढ़ दुर्ग में हुआ था। जब महाराणा प्रताप ने राज्य संभाला तब अधिकांश भारत मुगलों के अधीन था परंतु महाराणा प्रताप ने इसे स्वीकार नहीं किया । मेवाड़ को जीतने के लिए मुगलों ने कई प्रयास किए किंतु वे असफल रहे । महाराणा प्रताप ने कई वर्षों तक मेवाड़ को पराधीनता से स्वतंत्र रखा। उनकी वीरता ऐसी थी कि उनके दुश्मन भी उनके युद्ध कौशल के कायल थे , दयालु ऐसे की दुश्मन की पकड़ी गई महिलाओं को सम्मानपूर्वक वापस भेज देते । हल्दी घाटी के युद्ध के बाद वे जंगलों में रहने लगे और घांस की रोटी और फलों को खाकर पुनः अपने राज्य को स्वाधीन कराने के लिए प्रयासरत रहे ।

कम साधन के बावजूद उन्होंने कभी हार नही मानी और देश की स्वाधीनता के लिए लड़ते रहे और कभी अपनी आजादी नहीं त्यागी और वीरता के साथ चितौड़ के अलावा अपने समस्त दुर्गों का शत्रु से पुरानरूधार कर लिया और उदयपुर को अपनी राजधानी बनाकर संपूर्ण मेवाड़ को मुगलों से स्वाधीन कराया । इसके बाद भी मुगलों ने कई प्रयास किए परन्तु महाराणा प्रताप को हारा न सके। 29 जनवरी 1597 को महाराणा प्रताप की युद्ध और शिकार की चोटों की वजह से मृत्यु हो गई। कहा जाता है की जब महाराणा प्रताप की मृत्यु हुई तो अकबर की भी आंखे नम हो गईं और उसने कहा कि देशभक्त हो तो महाराणा प्रताप जैसा।

भारत के इतिहास में महिलाओं की वीर गाथा भी सुनहरे अक्षरों में लिखी गई है। ऐसी ही एक कहानी है वीरांगना हाड़ी रानी की जिन्होंने मुगलों से अपने राज्य की रक्षा और आजादी के लिए अपना बलिदान दे दिया । यह बात उस समय की है जब मेवाड़ पर महाराणा राज सिंह 1652-1680 का राज था। इनके सामंत सलूंबर के राव चुंडावत रतन सिंह थे । जिनसे हाल में ही हाड़ा राजपूत सरदार की बेटी का विवाह हुआ था। कहा जाता है की हाड़ी रानी के विवाह को केवल 7 दिन ही हुए थे और उनके पति रतन सिंह को युद्ध पर जाना पड़ा । जहां औरंगजेब की सहायता के लिए आ रही सेना को रोकना था।

विवाह के इतने कम दिन हुए थे और रतन सिंह को युद्ध के लिए पत्नी को छोड़ कर युद्धभूमि की तरफ निकालना पड़ा इसीलिए उनका मन विचलित था। रानी ने विजय के लिए कामना कर पति को विदा किया ।

सरदार रतन सिंह युद्ध के लिए निकल पड़े परंतु पत्नी वियोग उनके मन से नही जा रहा था। उनके मन में रह रह कर संकाय आतीं कि न जाने युद्ध में क्या होगा, कहीं उनकी पत्नी उन्हें भूल न जाए। आखिर में उनसे रहा न गया और उन्होने रानी को पत्र लिखा –

प्रिय मुझे भूलना मत । मैं युद्ध से लौटकर जरूर आऊंगा। मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है यदि संभव हो तो अपनी कोई निशानी मुझे भेज देना , उसे देख कर मैं अपना मन हल्का कर लूंगा ।

पत्र पढ़कर रानी को लगा की अगर उनके पति ऐसे मोह में रहे तो शत्रुओं से युद्ध कैसे लड़ेंगे। अचानक उन्होंने कुछ विचार कर संदेशवाहक को एक पत्र देते हुऐ कहा कि मैं तुम्हें अपनी अंतिम निशानी देती हूं और तुम इसे थाल में सजाकर वस्त्र से ढककर मेरे वीर पति के पास पहुंचा देना। उन्होंने पत्र में लिखा –

प्रिय मैं तुम्हें अपनी अंतिम निशानी भेज रही हूं । मैं तुम्हें अपने मोह के बंधन से आजाद कर रही हूं । अब बेफिक्र होकर अपने कर्तव्य का पालन करना । मैं स्वर्ग में तुम्हारी बाट जोहूंगी ।

पत्र संदेशवाहक को देकर हाड़ी रानी ने अपनी तलवार निकाली और एक ही झटके में अपना सिर धड़ से अलग कर दिया। संदेशवाहक की आंखे आंसु से भर आईं। उसने हाड़ी रानी के कटे हुए सिर को सुहाग की चूनर से ढक कर स्वर्णथाल में लेकर भारी मन से युद्ध भूमि की ओर दौड़ पड़ा । उसको देखकर सरदार ने पूछा क्या तुम रानी की निशानी ले आए । संदेशवाहक ने कांपते हाथों से थाल आगे बढ़ा दी । सरदार थाल देख कर सदमे में आ गया । उसके मोह ने उससे उसकी सबसे प्यारी चीज़ छीन ली थी। अब उसके पास जीने का कोई औचित्य न था । उसके सारे मोह के बंधन टूट गए । उसने युद्ध में ऐसा शौर्य दिखाया जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। वह अपने जीवन के अंतिम सांस तक लड़ता रहा । औरंगजेब की सहायता के लिए आई सेना को उसने आगे नहीं बढ़ने दिया जबतक मुगल सम्राट भाग खड़ा न हुआ ।

इस जीत का श्रेय उसके अवर्णीय पराक्रम के साथ साथ अपने राज्य की स्वाधीनता के लिए हाड़ी रानी के उस बलिदान को भी जाता है जो इतिहास का अविस्मरणीय बलिदान है।

इस साल जब पूरा भारतवर्ष आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। मैं इस निबंध में भारत के वीरता भरे विशाल इतिहास की कुछ बातें लिखकर सभी वीर और वीरांगनाओं को श्रृद्धांजलि देती हूं और उन्हें नमन करती हूं जिन्होंने इस देश की स्वाधीनता और रक्षा के लिए अभूतपूर्व बलिदान दिए ।

अपरमिता सिंह

बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

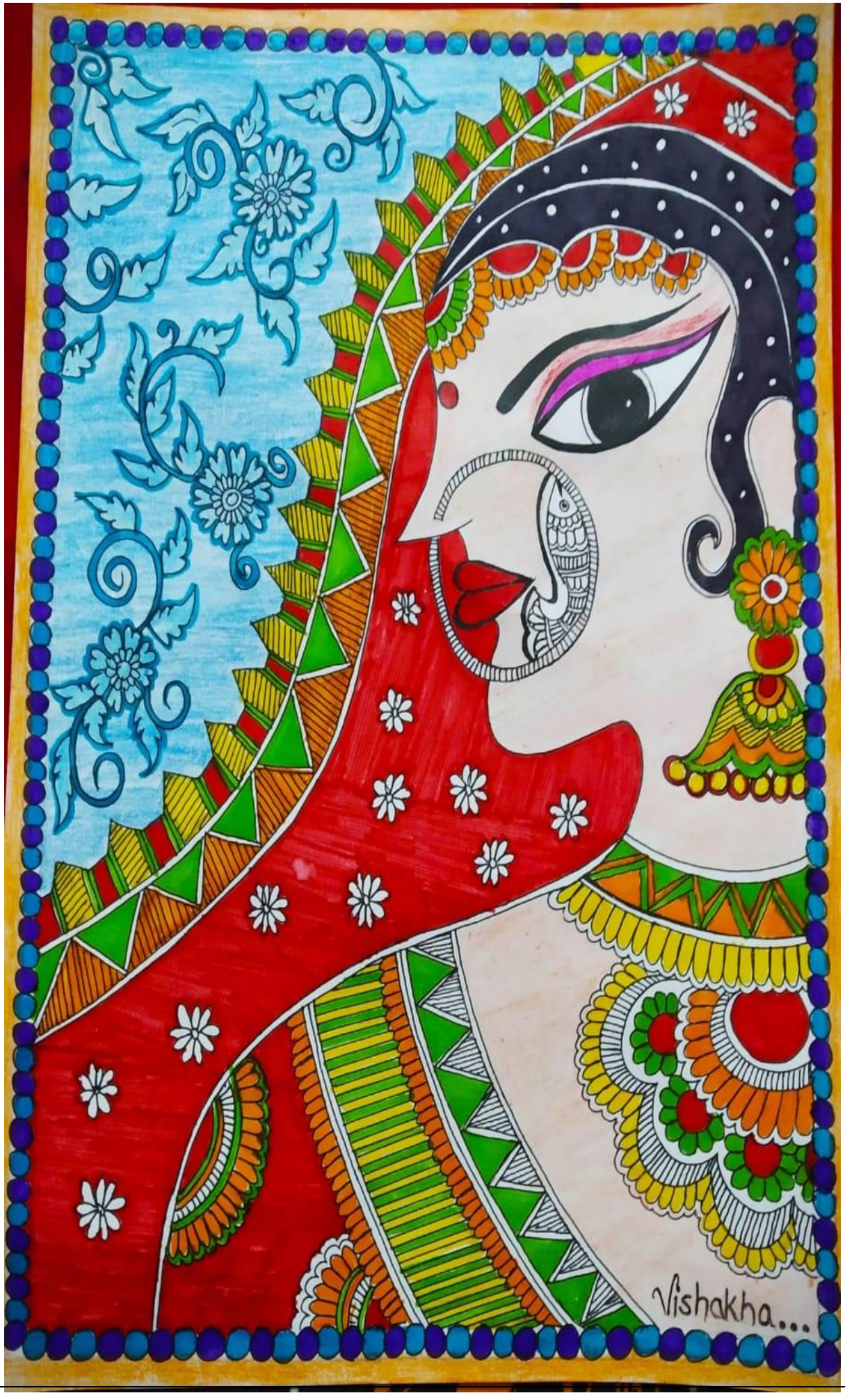
Vishakha...